Haryana Vidhan Sabha

Debates

14th August, 1969

(Morning Sitting)

Vol. II No. 5

OFFICIAL REPORT

CONTENTS

Thursday, the 14th August, 1969

	Page
Presentation of the Third Report of the Business Advisory Committee	(5)1
BILL -	
The Haryana Appropriation (No. 3) -----1969	(5)2-25

ERRATA

TO

HARYANA VIDHAN SABHA DEBATES, VOL. II, No. 5

DATED 134TH AUGUST, 1969 (MORNING SITTING)

शुद्ध	अशुध	पृष्ठ	लाइन
पेरशान	प्रेशान	(5) 6	6
गवर्नमैंट	गवर्नमट	(5) 6	20
इम्पलीमैंट	मइपलीमट	(5) 9	14
मैडिकल	मैंडिकल	(5) 9	31
अंजीनियरिंग	bthfu;fjax	(5) 9	33
आज	आाज	(5) 10	5
मुबारिकाबाद	मुकारिकबाद	(5) 11	17
सवैंट	सबट	(5) 11	28
minutes	muinutes	(5) 17	4
राम	लाल	(5) 18	29
कुछ आवाजें	कुछ आबाज़	(5) 19	20

गजटिड	गज़ेटड	(5) 23	24
be	b	(5) 25	11

HARYANA VIDHAN SABHA

Monday, the 11th August, 1969

The Vidhan Sabha met in the Hall of Haryana Vidhan Sabha, Vidhan Bhavan, Sector , Chandigarh, at 9.30 P.M. of the /clock. Mr. Speaker (Brig. Ran Singh) in the Chair.

PRESENTATION OF THIRD REPORT OF THE BUSINESS ADVISORY COMMITTE

Mr. Speaker : I have to report the time-table fixed by the Business Advisory Committee in regard to various business in its Third Report.

The Committee met at 11.30 A.M. on Wednesday, the 13 August 1969.

The Committee, after some discussion, recommended that on the 14th August, 1969, the Assembly shall hold two sittings, i.e., from 9.30 A.M. to 11.15 A.M. and from 11.30 A.M. to 6.30 P.M. (with one7and7half hours break for lunch from 12.30 P.M. to 2.00 P.M.) and will transact the Business as follows :-

1st Sitting (From 9.30 to 11.15 A.M.) –

1. No Question Hour

2. The Haryana Appropriation (No. 3) Bill, 1969.

2nd Sitting (From 11.30 A.M. to 6.30 P.M. with one and a half hours bread for lunch form 12.30 P.M. to 2.00 P.M.

1. Question Hour. 11.30 A.M. to 12.30 P.M.

2 Paper to be laid on the Table.

3. Legislative Business 2 P.M. to 5 P.M.

(a) Bills ;

(b) Official Resolution regarding the ratification of the amendments to the Constitution (Twenty-Second Amendment) Bill, 1969.

4. Censure Motion. 5 P.M. to 6.30 P.M.

Finance Minister (Shrimati Om prabha Jain) : Sir I beg to move –

That this house agrees with the recommendation contained in the Third Report of the Business Advisory Committee.

Mr. Speaker : Motion moved –

That this House agrees with the recommendations contained in the Third Report of the Business Advisory Committee.

Mr. Speaker : Question is –

That this houses agress with the recommendations contained in the Third Report of the Business Advisory Committee.

The Motion was carried.

THE HARYAN APPROPRIATION (NO. 3) BILL, 1969

Finance Minister (Shrimati Om Prabha Jain) : Sir, I beg to introduce the Haryana Appropriation (No. 3) Bill, 1969.

Finance Minister: Sir I beg to move –

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill be taken into consideration at once.

Mr. Speaker : Motion moved –

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill be taken into consideration at once.

चौधरी चान्द राम (बबैन एसी.सी.) : आदरणीय स्पीकर साहिब, यह चूंकि छोटा सा बिल है, इसलिये इसमें इधर–उधर जाने की गुजाइश तो नहीं लेकिन जो मद इस में दर्ज है उससे ऐसा लगता है कि जैसे बहुत काट–टांट करके इस तरह का ढंग बरता गया है कि कुछ हल्को के लिये कुछ रकम रखी गई है और सप्लीमेंटरी बजट को जो कायदा होता है वह इस्तेमाल नहीं किया गया ।

आज अगर आप स्टेट का ढांचा देखें तो पता लगेगा कि स्टेट को ओवर बर्डन कर दिया गया है। एडमिनिस्ट्रेशन में जहां थोड़े अफिसर्ज़ होने चाहिये वे ज्यादा कर दिए गए हैं। यह स्टेट छः जिलों की स्टेट है। यह तो नो न्फिडेंस मोशन डिसकस

करते हुए बहुत से बाते हो ली कि कितने डी.आईजी. और आई.जी और दूसर अफसरान बढ़ाये गये है, जरा आप अफसरान की लिस्ट पर नज़र मार कर देखें, जब से यह मिनिस्टरी आई तब से एडमिनिस्ट्रेशन पर बे–तहाशा पैसा खर्च किया गया है। यह पैसा जनता है के गाढ़े पसीने की कमाई का पैसा है जो टैक्सों के रूप में गवर्नमट को दिया जाता है। आपने देखा है कि आर्डिनेंसिज के ज़रिए कई टैक्सिज़ लगाए गए हैं। जब इस तरह के टैक्सिज़ लगाए जाएं तो उनका इस्तमाल ठीक एंग से होना चाहिये। जो लेाग इकौनाकिस के विद्यार्थी हैं, उन्हे इस बात की जानकारी है कि जनता कि एक एक पाई ऐसे ढंग से खर्च होनी चाहिये कि जिससे जनता का फायदा हो, और हर हल्के में उसका बराबर डिस्ट्रिब्यूशन होना चाहिये। ऐप्रोप्रिएशन बिल में जो जो डिमांड्ज आई है उन में हल्के छांटे गये है कि फलां फलां हल्के में फमिली रिलीफ पर या दूसरी स्कीमों पर इतना इतना रूपया खर्च होगा। लेकिन अफसोस की बात है कि कई हल्कों में तो दस दस वाटर सप्लाई स्कीमें है और कई एक हल्कों के अन्दर चार चार स्कीमें एक एक वाटर सप्लाई की स्कीम प्रोवाईड की गई है और उन स्कीमेां मातहत 58– 58 गांव हैं यह ज़रूरी नहीं है और जायज़ नहीं है कि जो चीफ मिस्निटर हो या मिनिस्टर हो उनके हल्को मेर सारी ैकीमों की भरमार हो और दूसरे हल्के ऐसे ही रह जाएं। मुझे तजरूबा है, मैं समझता हूं और सभी जानते है कि 10 साला तक लगातार पी.डब्ल्यू.डी. के वज़ीर एक ही हल्के सक बनते आ रहे है और वह अधिकतर बपने हल्के के लिये रूपया जमा करते

रहे और स्कीरम बनाते रहे। मेरे हल्के में राजौंद सरकार रोड है, उसके लिये गांव वालों ने दा साल पहले 25 फीसदी रूप्या सड़क बनाने के लिये इकट्ठी किया, लेकिन अभी तक सड़क बननी शुरू ही नहीं हुई और उसको डोड़ कर दूसरी नई–नई सड़के बनाई जा रही है। स्पीकर साहब, आप देखें कि इन्होने जो कुछ किया है, क्या वह ठीक है ? मेरे कहने का मक्सद यह है कि कोई मैयार होनी चाहिये जिसकी बिना पर सभी हल्कों का विाकस हो। अखिर हम किस बात के लिये चुन कर आते हैं ? हम जनता के नुमायंदे हैं और हमारा हर एक का फर्ज़ है कि हम एक इम्मेज पैदा करें जिसकी बिना परलोग हमं निष्पक्ष कह सके। यह तो सब को पता ही है कि सब लोग तो मिनिस्टर बन नहीं सकते। अगर आप कोई इन्क्वायरी कमेटीर चाहे आप हाउस में बैठाएं या बाहर बैठाएं, तो आप को पता लगेगा कि इस स्टेट का ज़्यादा पैसा, चाहे वह नहरों के निकालने में इस्तेमाल होता है, चाहे वह सड़के बनाने के काम में खर्च होता है, चाहे वह फैमिन रिलीफ की शक्ल में खर्च होता है, सब का सब वहां जाता है जहां से कोई न कोई मिनिस्टर आता है। मै। इसके बारे जितना भी कहूं उतना ही कम है। अगर आप कमेटी बनाकर जांच कराएं तो जनता की आंखे खुल जाएंगी। मै राजौर–खडकाली का ज़िक्र करूं कि उस हल्के में कुछ काम नहीं हुआ। इसके पीछे भी एक राज़ है कि वहां के मैम्बर की कुछ कराने की नीयत ही नहीं थी।

सूबेदार प्रभु सिंह : क्यों गड़े मुर्दे उखाड़ते हो ?

चौधरी चांद राम : बैठे रहो, आप तो मेरे खिलफ बोला ही करते है। तुम्हे तो अलाउंस इन्ही बातों के लिये मिलता है। तो मैं अर्ज़ कर रहा था कि आज वहां पर दस साल के बाद भी काम नहीं हुआ, उस जगह के लिये वायदे तो बहुत किए जाते रहे हैं, लेकिन मैरिट को देखते हुए भी काम नहीं किया जाता और दो तीन सड़के जो जी.टी रोड से मसाना, और जी.टी रोड से चढौनी तक बन रही थी, उनका भी काम रोक दिया गया है। अगर मै। कहताा हूं कि भाई काम रिो तो वज़ीर साहब कहते है कि वहां के लोगों ने चांद राम को क्यों चुना है ? अगर आप की यही नीयत है और आप लोगो का इस तरह से भला करते हैं तो मैं लिख कर दिए देता हूं कि मैं यहा से नही खड़ा होऊंगा। एक राजौर–जठराना रोड़ है, वह केवल छः मील को टुकड़ा है, वहां के लोगों ने कहा कि एक लाख रूपया हम शूगर कन सोसायटी की तरफ से दे देते है और 50 हजार रूपया ब्लाक समिति की तरफ से और 50 हजार रूपया जनता की तरफ से दे देंगे । इस छः मील के टुकड़े पर तकरीबन पौने चार लाख रूपया खर्च होता था जिसमें से दो लाख के करीब जनता देने को तैयार है। मगर जनता की कोई बात नहीं सुनी गई जहां तक एडमिनिस्ट्रेशन का सम्बन्ध है उसके विषय में मैं क्या कहूं इस में तो कोई परवाह नहीं करता हक किस ने क्या कहा है ? वैसे तो कोई रिस्पांसी बल एडनिनिस्ट्रेशन तो इंडिया में है ही नहीं। मै समझता हूं कि यह रैवोल्यशन आने की निशानी है। जब तक ओबजैक्टिव ढंग से न सोचा जाए कि किसी ने कोई बात कही है, उतनी देर तक मुल्क

आगे नहीं चल सकता। लेकिन यहां तो उल्टी बात है, यह कहते है कि यह बात चुंकि आपेज़िशन कीतरफ से कही गई है, इसलिये यह नहीं करेंगे चाहे वह कितनी ही अच्छी बात क्यों न हो हिन्दुस्तान को बड़ी कुबार्ननियों के बाद आज़ादी मिली है। लेकिन बावजूद इस के कि अब 22 साल हो गए हैं हमें आज़ाद हुए हमारे जो अफसर हैं या एडमिनिस्ट्रेशन हैं वह बयोरोक्रैटिक ढंग से काम करती है। आंध्रा के चीफ मिनिस्टर ने कहा था कि मिनिस्टरों को एग्री कराना आसान है लेकिन अफसरों को किसी बात के लिये राजी नहीं कर सकते । तो स्पीकर साहब मैं यह कहना चाहता हूं कि चाहे कोई भी काम किया जाए, उसमें यह जरूर ज़ाहिर होना चाहिये कि वह इम्पार्शल ढंग से किया गया । वरना क्या होगा ? स्पीकर साहब आप खुद कई बार अपनी तकरीरों में कह चुके है कि इस हिन्दुस्तान में अगर गरीब लोगों का काम नहीं हुआ, तो रैवोल्न्यूशन आएगा। मैंने अपने कानों से सुना है, आप ने यह कहा था कि अगर वक्त पर उनकी जरूरते पूरी न की गई, तो हालात खराब हो जांएगें। क्योंकि जब शांति से काम नहीं होता है तो रैवेल्यूशन आता है। हिन्दुस्तान वैसे भी शाति पसंद देश है, इसलिये यहां पर रैवोल्यूशन नही आना चाहिये।

Mr. Speaker : I still stand by my statement.

चौधरी चान्द राम : जब हमारे औस्ट हाउस का स्पीकर यह कहता है कि अगर गरीबों की ज़ररते पेरी न की गई, अगर तुम ने इस बात की परवाह न की तो यहां पर इन्कलाब आएगा तो

फिर इस से ज्यादा चेतावनी और क्या हो सकती है ?किसी ने कहा कि वैसे तो discontent is the cause of progress लेकिन यहां तो कौज़ आफ प्रौग्रेस की बजाए, क्रईसिज़ लाने की बात है। हमारे चीफ मिनिस्टर साहब अपोजिशन के एम.एल.ए. चौधरी प्रताप सिंह के हल्के में गए और उन्होने लोगो को कहा कि जो हारा हुआ कांग्रेस का केंडीडट है, उसको एम.एल.ए. समझो और चौधरी प्रताप सिंह को न समझो। यह बात उन्होने पब्लिक जलसे में जाकर कहीं कि जो मैंबर लोगों से वोट लेकर जीता हुआ है वह एम.एल.ए. नहीं है और जो कांग्रेस का हरा हुआ कैंडीडेट है उसको एम.एल.ए. समझा जाए। मैं स्पीकर साहब समझता हूं कि एक चीफ मिनिस्टर के मुंह से ऐसी बातें कही जानी शोभा नहीं देती, क्योंकि जब कोई चीफ मिनिस्टर बन जाता है तो वह सारी स्टेट का चीफ मिनिस्टर होता है सरना फिर इस जमहूरियत को कोई मकसद हीं नहीं रह जाता। मैं हैरान हूं, पहली बार मैंने एक एसेा सरकूलर देखा है कि देहली के अन्दर रैस्ट हाउस में एम.एल. एज. नहीं ठहर सकते। हम ने 22 साल तक कही भी ऐसा नहीं देखा कि एक एम.एल.ए के साथ इस तरह का डैरोगेटरी स्लूक हो । कीहं पर भ्झी ऐसा बिल नहीं पास हुआ कि जब तक कोई मैंबर लिख कर नहीं देगा कि हम 500 रूपया के हिसाब से अपना अलौंस लेंगे, तब तक उनको नहीं मिलेगा। जब आप कोई बिल लाते हैं तो हव पास तो होगा लेकिन आप ने यह नहीं देखा कि इससे कितनी हियूमिनिएशन होगी कि मैंबर लिख कर दरखस्त दे कि मुझे फलां फलां रियायत दरकार है। क्या यह अकेले अपेजीशन

वालों को ही लिख देना पड़ेगा हम ने एतराज़ किय तब भी पास होना था और अगर न एतराज़ करते तो तब भी पास होना थ, लेकिन यह कौन सी डीसैंसी है कि एम.एल.एज से पहले दरखास्त दी जाए कि हमें फलां फलां फैसिलिटी दी जाए। स्पीकर साहब अगर वारंट आफ प्रिसिडैंस देखा जाए तो लैजिस्लेटर का रूतबा सैक्रेटरी से ऊ हैं, लेकिन उनको रैस्ट हाउस में भी ठहरने की इजाज़त नहीं है लेकिन उस में लिखा हुआ है for visiting Minister and officers. मैं एक दिन डिफैस कालोनी के रैस्ट हाउस में ठहरा हुआ था। मैं किसी कमरे में जाने लगा, तो पता लगा कि वहां कोई लेडी ठहरी हुई है वहां पर कोई अफसर नहीं ठहरा हुआ था, बल्कि उस अफसर की धर्मपत्नि ठहरी हुई थी। मैं यह पूछना चाहता हूं कि क्या आप ने इसी लिये अफसरों को इजाज़त दे रखी है कि उसका मिसयूज़ हो? आज कौन नहीं जानता कि सरकार कारें अफसरों की फैमिलीज़ यूज़ करती है। मैं एक दिन 23 सैक्टर ममें खड़ा था वहां पर बिजली बोर्ड की गाड़ी खड़ी थी। मैंने उनको पूछा कि यह गाड़ी वहां कैसे आई है, क्या आप डियूटी पर आए हुए हैं तो डनहोंने जवाब दिया कि आप कौन है पूछने वाले ? तो मैंने कहा कि अच्छा भाई मैं जाता हूं। फिर मैंने किसी और आदमी को उन से पूछने के लिये भेजा, तो फिर उन्होंने बताया कि यहां पर मौजमाज करने के लिये आए हैं। यहां तो चीफ मिनिंस्टर साहब पर भी इलज़ाम लगा है कि उनकी फैमिली एग्रो इडस्ट्रियल कारपोरेशन की कार में भिवानी गई थी।

सिचाई तथा विद्युत मन्त्री : लोगो को बीस हज़ार कनैक्शन्ज़ कैसे देते?

चौधरी चांद राम : कनैक्शन की बात आप करते हैं, इस के अन्दर अगर रिश्वत न चली हो, तो मैं चैलेंज करता हूं। आप ने लोगों को बर्डन किया है कर्ज़ा बढ़कर, वह क्या लोगों ने नहीं देना ?

इसके इलावा आप पंजाब से इंसाफ नहीं हासिल कर पाए है।

श्रीमती चन्द्रावती : स्पीकर साहब, यह चेयर को उन एड्रेस करके आपस में क्यों झगड़ा कर रहे हैं ?

चौधरी चान्द राम : जब आप ने कहा कि हम ने बीस हज़ार कनैक्शन दे दिए है तो मैंने कह दिया कि मैं तैयार हूं आप किसी हल्के में भी चले जांए और ज़रा किसानें से पूछे कि आप ने कितना रूपया दिया है, कनैक्शन लेने के लिय, तो आप को वह सब कुछ बता देंगे। हम ने कहा कि सीवन में गोली चलाई आप इसकी इन्क्वायरी करवाएं, मगर उसकी इन्क्वायरी नहीं करवाई गई। स्पीकर साहब हमेशा यह कायदा होता है कि अगर कोई जिम्मेवारी से बात की जाए तो गवर्नमैंट उस पर गौर करे और अगर ठन्क्वायरी की जरूरत हो, तो उससे न झिझके। हम यह जानते है कि कनैक्शन दिए गए, लेकिन अगर यह कोई कमेटी बना कर इन्कवायरी कराएं, तो पता लग जाएगा कि कितनी रिश्वत

चलती रही है। यहां तक कि कर्जा लेना चड़ता है, तो उसके लिये भी रिश्वत दिए बगैर काम नहीं बनता।

एक दफा फैसला हुआ कि यह जो ज़मीदारो को कर्जे मिलते है इन के लेने में आसानी हो सकती है अगर उनको उनकी जीनों की "पास बुक्स" बना कर दे दी जायें। यह मैंने भी अपने वक्त में करने की कोशिश की थी। यह ठी है कि अफसर कुछ इस में रूकावट डाते है, लेकिन मैने कहा कि क्या हर्ज़ है अगर "पास बुक्स" बना दो। हर जमींदार के पास "पास बुक" हो जिस में उसकी सारी जमीन का इंद्राज हो अगर कोई अपनी जीमन बेचता हे, तो वह उसकी पास बुक से घटा दी जाये और अगर खरीद करता है तो वह उसकी पास बुक में जमा कर दी जाये। इस में फिर इन्स्पैक्टरों, की क्या जरूरत रह जाती है कि वह कर्ज के बारे में रिक्मैंडेश्न्ज करते फिरें और वह जमीदारों को यह कह कर प्रेशान करें, कि यह बांड भरना पड़ेगा और टिकट खरीदने पड़ेगे और वह बेचारे इस चक्कर में मारे मारे फिरें। सीधी स बात है पास बुक को देख और

खान अब्दुल गफ्फार खं : आन ए प्वांयट आर्डर, सर। स्पीकर साहब, मैं आपकी मारफत मैंबर साह से पूछना चाहता हूं कि वह आस्तीने क्यों चढ़ा रहे हैं (हंसी)

चौधरी चांद राम : यह आने वाले वक्त के लिये चढ़ा रहा हूं।

एक आवाज : एक वक्त तो चला गया।

चौधरी चांद राम : क्या बात करते हो ? स्पीकर साहब, इस गवर्नमैंट ने एक उप–चुनाव कराया है और दूसरे की अभी हिम्मत नहीं पड़ रही है। अवहां अभी अपनी पोज़ीशन उसैस ही कर रहे है कि शादाबाद में हालात इन के फवेर में बनते है कि नहीं बनते। नारमली दो महीने में यह चुनाव होना चाहिये था, लेकिन इनकी हिम्मत नहीं पड़ रही, क्योंकि पहले उप–चुनाव में इन्हौंन अपनी जनता में पापूलैरेटी देख ली है और देख लिया है कि जनता इन से कितनी खुश है अगर आप से जनता खुश है, तो आप की पापुलैरेटी रीफलैक्ट होनी चाहिये, लेकिन सारी गवर्नमट मशीनरी और ताकत इस्तेमाल करने के बावजूद भी इन को मार खानी पड़ी। इन्होनें बड़ी डींग मारी कि 21 हजार कनैक्शन दे दिये है ठीक है दे दिये होंगे, लेकिन इसका इम्पैक्ट जनता पर क्या पड़ा है ? सारे इंडिया में रूलिंग पार्टी का उम्मीदवार इतनी बूरी तरह नहीं हारा होगा, जिस तरह हरियाणा में हारा है। क्या कहूं स्पीकर साहब, क्योंकि उस बात को यहां ताल्लुक नहीं है, लेकिन आप देखें देहली में आज क्या हो रहा है और अखबारात में क्या पढ़ रहे हैं? आज कहां है कांग्रेस पार्टी और कहा है उसका वह डिस्पिलिन जिसके नाम पर कहते थे यह है वह है ? आज उस डिस्पिलिन की धज्जियां उड़ गई (शोर)। आप अब इधर आ जाओं यहां हाई कमांड से आर्डर नहीं लेना पड़ेगा, मिनिस्टरी बढ़ाने के लिये। इन पर जब ज़ोर पड़ता है तो कहते है कि हाई

कमांड नहीं मानता, मैं मिनिस्टर नहीं बढ़ा सकता, पार्लियामैन्टरी सैक्रेटरी ही बना सकता हूं। हमारा एक जेल यात्री साथी मिनिस्टर बनना चाहता था, लेकिन उसे भी नहीं बना सके, कहते है कि हाई कमांड नहीं मानता

मुख्य मन्त्री : इन का मतलब है कि इनको भी कन्सिडर करूं लेकिन मैं नही करूंगा (हंसी)।

Mr. Speaker : I am glad that the House is in very good humour.

चौधरी चांद राम : मैंने यह इसलिये कहा कि यह देहली के बन्धन से मुक्त क्यों नहीं हो जाते ? ऐस॰वी॰डी॰

चौधरी राज सिंह दलाल : आन ए प्वांयट आफ आर्डर, सर। स्पीकर साहब, चांद राम जी ने बताया कि इनका कोई साथी वज़ीर बनना चाहता था, लेकिन नहीं बन सका, बड़ी किस्मती है लेकिन क्या वह अभी भी बनना चाहता है ?

चौधरी चांद राम : आज एक वज़ीर अपनी पार्टी का ही बना कर दिखा दो। मैं दावे से कह सकता हूं कि इन्होने बहुंत कोशिश की, लेकिन कांग्रेस हाई कमांड ने कह दिया कि वज़ारत नहीं बढ सकती, इसलिये इन्होनें पालियामेंटरी सैक्रेटरी बना बना कर कुछ दिन काटे है ओर बाकियो को कहा है कि 48 घंटे गुजरने दो, सब वायदे पूरे करूंगा। क्या आप को मालूम नहीं है

कि चीफ मिनिस्टर साहब ने हर बार कहा है कि जब मै। कोई डैफिनिट प्रोमिज़ करता हूं तो वह पूरा करता हूं ?

चौधरी नेकी राम : आन ए प्वांयट आफ आर्डर, सर। मैंबर साहब आसतीनें चढ़ रहे हैं और इसके साथा साथ घूम भी रहे हैं। क्या इनका जिस्मानी तौर पर लड़ने का इरादा है ? (हंसी)

Mr. Speaker : I do not thin, you need worry about it.

चौधरी राम प्रकाश (पालियामैटरी सैक्रेटरी) : आन ए प्वांयट आफ आर्डर, सर, अभी अभी इन्होने फरमाया कि चीफ मिनिस्टर साहब ने दिन काटने के लिये पार्लियामैंटरी सैक्रेटरी बढ़ाये है। उनमें एक मै भी हूं, लेकिन मैं कहना चाहता हूं कि यह बात गलत है। चीफ मिनिस्टर साहब पालियामैंटरी सैक्रेटरीशिप लेना चाहें तो ले लें, मैं खुश हूं और इसके लिये तैयार हूं।

मलिक मुख्तियार सिंह : आन ए प्वायट आर्डर, सर। वैसे तो कोई बात नहीं मैं खुश हूं कि बड़े त्याग की बात की इन्होने लेकिन मैं चौधरी नेकी राम जी के प्वायंट आफ आर्डर का जवाब देना चाहता हूं। राव साहब ने भी इनकी ग़ैरत को ललकारा और मैंने भी काफी इनकी ज़मीर को झंझोड़ा, लेकिन बात इनकी समझ में नहीं आई। आस्तीनें चढ़ाने और घूमने से बात नही बनेगी, इनको जबरदस्ती बाहर फैंकना पड़ेगा। (हंसी)

Mr. Speaker : May I mention that we should raise a Point of Order, where it is absolutely necessary to do so. At

the moment, undue interference is being caused to the hon. Member on his legs.

महन्त गंगा सागर : राम प्रकाश जी ने बड़ी त्याग की बात दिखाई कि इस्तीफा दे दूंगा, लेकिन इस के साथ एक त्याग यह भी कर दें कि वह मेरी जीप तो वापिस कर दे जो इलैक्शन के लिये इन्होने ली थी। एक साल से पैर टूट गये हैं मांगते मांगते (हसी)

चौधरी राम प्रकाश : इन्होने मेरे पर यह इलजा़ाम लगाया है कि इन से मैंने जीप ली थी यह अपने धर्म ईमान से कहे कि कब मैंने इनसे जीप ली थी ? (शोर)

महन्त गंगा सागर : अगर जानना चाहते है तो उस जीप का नम्बर भी बात सकता हूं उसका नम्बर एम॰पी॰जी॰ 1619 है (शोर) एक एक चीज़ रिकार्ड की बात है और मैं बात सकता हूं (शोर) वह फ्रांख–दिली से कहे हम हरेक चीज़ पेश कर सकते है।

श्री बनारसी दास गुप्ता : ाअन एक प्वायंट आफ आर्डर, सर। कोई भी सदस्य इस प्रकार लेन देन का इलज़ाम लगायो तो वह न सदन के लिये और न किसी सदस्य के लिये शोभा की बात है। यहां जीपों की बात की जाती है और मैं वह स्पष्ट करना चाहता हूं कि इनक`एक नेता ने कांग्रेस के नाम पर चुनाव फंड इक्ट्ठी किया और उसमे से कांग्रेस उम्मीदवारों के लिये जीपें दे दी, और बीच में से अपना हलवा मांडा भी चलाया (शोर) क्या हक

है उन को ऐसी बाते कहने का (शोर) कहां से यह जीप आई थी और कहां से दी गई थी, वह अपना हिसाब खोल कर देखें

चौधरी जय सिंह राठी : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर। मेरे साथ जो मैंबर साहब बैठे है, वह बीमार है और उनको जबरदस्त जुकाम और खांसी है अगर मुझे खासी लग गई तो क्या होगा ? इसलिये इन से मेरी प्रोटैक्शन करें (हंसी) आप अपनी रूलिंग दे दें कि मैं इन के साथ कैसे बैठूं कहा बैठूं आर यह कहां बैठे।

सूबेदार प्रभु सिंह : स्पीकर साहब, मैं आपको बताना चाहता हूं कि इन मैंबर साहब से मुझे भी यही मुश्किल है कि जो राण्ड रोज़ क्रेया करें, मेरे पर उसका असर न हो जाये। इसलिये मेरी प्रोटैक्शन की जाये (हंसी)

Mr. Speaker : I think, have had a ver nice recess. Let us now continue with the main business before the House.

10 A.M.

चौधरी चांद राम : स्पीकर साहब, मैं इस बात पर नहीं जाता चाहता कि मेरे भाई पार्लियामेंटरी सैक्रेटरी क्यों बन गये है ? मुझे उनके बनने को कोई दुख नहीं। छः हरिजनों में से तनीन मिनिस्टरी में आ गयो हैं, जो बाकी तीन रह गये हैं उन्हे भी कर देना चाहिये। मैं चाहता हूं कि इन्हे प्रमोशन मिले। चौधरी राम प्रकाश जी सत् 1952 में समाजवादी पार्टी के मेम्बर थे, उसके बाद

कांग्रेस पार्टी में आ गये। एक मैंबर इतने सालों के बाद पर्लियामेंटरी सैक्रेटरी बने, मुझे इसकी खुशी है और मैं उन्हे शुभ कामनाएं पेश करता हूं। तुम हमारा डर दिखाकर, जो कुछ भी इन से मिलता है, ले लिया करो, हमें चाहे फायदा हो या नुक्सान हो, इस बात का फिक्र न किया करो। एक सूबेदार प्रभु सिंह है, मैं उन्हे कहता हूं कि तुम भी हमारी तुक्ताचीनी कर दिया करो, कोई बात नहीं एक भाई के पास मै। जानबूझ कर गया। मैंने उन्हे कहा कि तुम्हे पर्लियामेंटरी सैक्रेटरी बनने का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि तुम्हे मिलने के लिये चांद राम तुम्हारे कमरे में आयेगा और चीफ मिनिस्टर साहब तुम से डरा करेंगे। ठीक है, हमारी कौस्ट पर तुम्हारा कुछ बनता हो तो बना लिया करो। एक बात मैं आप से खास तौर पर कहना चाहता हूं आज तक छः सात हरिजन भाई मिनिस्टरी में आये है लेकिन किसी ने डिस्ट्रिक्ट हरिजन वैलूफेयर आफिसरों को गज़ेटिड बनाने का फैसला किया था, लेकिन उसके बाद जब यह सरकार आई तो इस ने इस फैसले को इम्पलीमेंट नहीं किया यही एक महकमा है जिसके आफिसर गज़ेटिड नहीं हैं।

कृषि तथा श्रम मन्त्री : आप को पता नहीं, जो काम आप नहं कर सके, वह हो चुका है।

चौधरी चांद राम : मैं दावे के साथ कह सकता हूं कि ाअज तक किसी डिस्ट्रिक्ट हरिजन वैल्फेयर आफिसर को गज़ेटिड होने के आर्डर नहीं दिये गये और न ही कोई बना है। हम ने श्री

मूल चन्द जैन से आर्डर करवा लिये थे, लेकिन इम्पलीमट करने के लिये यह सरकार बन गई, इन्होने वह चिट्ठी रोक दी और आर्डर इम्पलीमट नहीं होने दिये।

मलिक मुख्तियार सिंह : आन ए प्वायंट आफ आर्डर। स्पीकर साहिब, चौधरी चांद राम जी ने इल्ज़ाम लगाया कि कोई भी हरिजन आफिसर गज़ेटिड आफिसर नहीं है। मैं उनकी इन्फर्मेशन के लिए कहना चाहता हूं कि डिस्ट्रिक्ट फूड एंड सप्लाई आफिसर, जो कि सूबदेार प्रभू सिंह के लड़के हैं, क्या वे गज़ेटिड आफिसर नहीं हैं ?

सूबेदार प्रभु सिंह : स्पीकर साहिब, मैं समझता था कि चौधरी साहब पढे लिखे आदमी हैं, लेकिन मुझे अब पता चला कि वे अनपढ़ है। चौधरी मुख्तियार सिंह जी चौधरी चांद राम ने सिविल सप्लाई डिपार्टमेंट के बारे में नहीं पूछा था, उन्होंने डिस्ट्रिक्ट हरिजन वैल्फेयर आफिसरों के बारे में पूछा था।

चौधरी चांद राम : मैं अपने साथी से इस के बारे में कुछ नहीं कहना चाहता, चाहे वह चौधरी साहिब का लड़का है या कोई और है, लेकिन है तो अपना ही अज़ीज। मेरी भी सारी जिन्दगी इसी बात में गुजरी है कि जो भाई पिछड़े हुए है, गरीब हैं उनको रोज़गार पर लगाया जाये। कल मैंने एक काल अटैन्शन नोटिस दिया था जिसमें मैंने पूछा था कि कितने हरिजन लड़कों को बी॰ए॰ मं दाखिल किया गया। हमारे यहां एक लड़का था

जिसके 48 फीसदी मार्क्स थे लेकिन उसको दाखिल नहीं किया। इतना ही नहीं एम॰ए॰ इक्नौमिक्स के लड़कों को दाखिल नहीं किया जाता। अगर मैं होता तो किसी की हिम्मत नहीं थी कि किसी हरिजन लड़के को दाखिल करने से इन्कार कर देता। आज मैंनें सूबेदानर प्रभू सिंह को कहा कि भाई तुम कहां से इंजीनियर पैदा करोगे, कहां से टाक्टर पैदा करोगे। बहुत से लड़के ऐसे है जिन्हे प्रि–इंजीनियरिंग में दाखिला नहीं मिलता। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि रोहतक के प्रि–इंजीनियरिंग में दाखिला नहीं मिलता। मुझे अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि रोहतक के प्रि–इजीनियरिंग कोलज में लड़को को दाखिल करने से इन्कार किया गया। जो लड़के मैरिट पर 48 फीसदी मार्क्स लिये बैठे थे उन्हे भी इन्कार कर दिया गया। बी॰एड॰ में पिछले साल एक भी हरिजन लड़का दाखिल नहीं हुआ। इस साल मैरने सेडीकेट का मेंम्बर होने के तौर पर 10 प्रसेंट रिजर्वेशन करवाई। इसी तरह रिवाड़ी में पांच हरिजन लड़के तो दाखिल कर लिए और पांच को कह दिया कि तुम चले जाओ, तुम्हारा 10 परसैन्ट कोटा पूरा हो गया है। मैं पूछता हूं कि आज हरिजनों की हालत क्या है ? यह राव सरकार ही थी जिसने यह फैसला किया था कि हरिजनों की फीस माफ की जाती है, उनसे कोठ पैसा नही लिया जायेगा और आज दरखस्ते लेते फिरते है कि जिसकी 1800 रूपये से ज्यादा सालाना आमदनी हो उस से फीस ली जायेगी। लोगों को सर्टिफिकेट लेने के लिए तहसीलदार, मैजिस्ट्रेटो के पास घूमना पड़ता है। आप अन्दाजा लगाये कि लोगों का कितना खर्चा होता

है एक सर्टिफिकेट लेने के लिए। राव गवर्नमेंट की बैबिनट का यह फैसला था कि हरिजन विद्यार्थियों पर कोई फीस नहीं लगेगी।

श्री ओम प्रकाश गर्ग : आन ए प्वायंट आफ आर्डर, सर।

श्री अध्यक्ष : नो इंट्रप्शन प्लीज़। आप देख ले कि क्या आपका प्वायंट आफ आर्डर है भी या नहीं ?

श्री ओम प्रकाश गर्ग : मै चौधरी साहिब से पूछना चाहता हूं कि जब राव गवर्नमेंट मे इतनी अच्छी बातें थी, तो उन्होने उसको छोड़ा क्यों था ?

Mr. Speaker : I said earlier, "No interruption please". This is no point of order. It is absolutely incorrect. (Interruptions)

चौधरी चांद राम : मैं अर्ज़ कर रहा था कि इन्होने हरिजन वैल्फेयर के लिए छः सात क्लर्क मांगे हैं, मैं पूछता हूं कि वे किस लिए मांगे हैं ? क्या स्कालरशिप देने के लिए क्लर्कों की कमी है ? आपको याद होगा, मैंने एक काल अटैन्शन नोटिस दिया था जिस पर ठन्होने बतौर चीफ मिनिस्टर यह कहा था कि हम हर स्टूडेंट को वक्त पर वज़ीफा देंगे, लेकिन कुछ नहीं हुआ। जो रूपया स्कालरशिप का था यानी जो यह स्कीम जारी की गई थी, इसका रूपया इक्नौमिकली बैकवर्ड क्लासिज़ को दि दिया, हरिजनों पर कुछ खर्च नहीं किया गया यह सारा रूपया जो स्कालरशिप के लिए आता है, इसे गवर्नमेंट आफइंडिया देती है, जिस पर आज

ण्गड़ा चला हुआ है कि यह लिमिटड एक्सपैंडीचर हो। सरकार को सिर्फ इस रूपये को तक्सीम करना होता है। मैंने एक ऐजुकेशन सैक्रेटरी को कहा कि आप स्टूडेंट्स को माहवार स्कालरशिप क्यों तक्सीम नहीं करते हैं। आप टीचर्ज़ को माहवार बिल बनाकर खजाने से पैसा निकलवा कर देते हो लेकिन स्टूडेंट्स को देते ही नहीं। स्पकी साहब, कालेजों और स्कूलों से दरख्वास्तें चण्डीगढ़ मंगवाई जाती है, और यहां आ कर कोई नक कोई खामी निकाल देते हैं जिससे बिल और लेट हो जाते है। आप क्यो नहीं वहीं पर सारी कार्यवाही कर लेते ?

श्री अध्यक्ष : आपको बोलते हुए काफी टाईम हो गया है, कितना टाईम और लेंगे ?

चौधरी चांद राम : मुझे 10 मिनट और दे दें, मैं सिर्फ इसी पर बोलना चाहूंगा।

Mr. Speaker : This item is to continue only up to quarter past eleven and other hon. Members are also to participate in this discussion. Therefore, the hon. Member may please finish his speech within the next two minutes.

चौधरी चांद राम : अगर कोई इन्ट्रप्शन नह होती तो मैं अपने टाईम में खत्म कर देता। इन्ट्रप्शन्ज़ में टाईम ज़्यादा लग गया।

श्री अध्यक्ष : आपको पांच मिनट और देता हूं।

चौधरी चांद राम : अच्छा जी। मैं कह रहा था कि वह रूपया गवर्नमेंट आफ इंडिया से बाता है। चाहे गवर्नमेंट कालेज के स्टूडेंट्स चाहे प्राईवे कोलज के है, उन्हे हर महीने स्कालरशिप मिलना चाहिए।

कृषि तथा श्रम मन्त्री : हमने इन्स्ट्रक्शन्ज़ दे दी है।

चौधरी चांद राम : वीकर साहब, ये कहते है कि हमने हुकम दे दिया है, अगर हुक्म दे दिये है, तो एजुकेशनल हैड अगर उनकी डिस्बर्समेंट माहवारी कर दें, तो आपको शबाश दूंगा कि आपने बड़ा अच्छा काम किया है क्योंकि मैंने तो सरकार से वजीफ नहीं लिया मिनिस्टर साहब तो रविदास होस्टल, रोहतक, मे रहे है। वह तकलीफ इन को महसूस होनी चाहिएं, जो इनको हुआ करती थी। (विघ्न) अगर आप वजीफा माहवार करते हैं, तो इसके लिए मैं आपको मुकारिबाद दूंगा। आज के जमाने में और उस जमाने से बड़ा फर्क है। इसलिए मेरी सरकार से प्रार्थना है कि यह काम जल्दी से जल्दी हो जाना चाहिए (विघ्न)।

राव गवर्नमेंट के वक्त हमने तो शडयूल्ड कास्ट एस॰पीज॰, एक रोहतक में और एक हिसार में लगाए थे और एक डभ्॰सी॰ जीन्द में लगाया था। यह गवर्नमैंट राव साहब की गवर्नमेंट का कैसे मुकाबला कर सकती है ? आज ये सढ़े छः डिस्ट्रिक्टस में हरिजन आई॰ पी॰ एस॰ होते हुए भी, किसी एक ाके एस॰पी॰ नहीं लगा पाए हैं और न ही आज कोई हरिजन डी॰सी॰ ही है। है कोई

जवाब इसका आपके पास ? (विघ्ज्ञन) अगर कोई हो तो मैं आपका धन्यवादी हूंगा। जो पहले एक एस॰पी॰ था भी उसे गालियां दी जाती है। उसे डेरोगेटरी लफ्ज चीफ मिनिस्टर साहब ने कहे। उसने जब मेरे से बात की, तो मेंने कहा तू बरदशश्त कैसे कर गया ? अगर तू एज ए गवर्नमेंट सवंट कुछ नहीं कह सकता था, तो एज एक सिटिज़न तो कुछ कह सकता था। तो स्पीकर साहब, मैं आप के द्वारा इनसे कहता हूं कि आप कोई मुकाबिला राव गवर्नमेंट से नहीं कर सकते जिसे कि आप एंटी हरिजन कहते हैं। उसने तो बहुत कुछ किया, परन्तु इन्होने क्या काम किया है? इन्होने कोई एस॰पी॰ या डी॰ऐस॰पी॰ शडयूल्ड कास्ट नहीं लगाया हालांकि सीनियर मोस्ट आई॰ए॰एस॰, आई॰पी॰एस॰ के लोग बैठे है। उनको तो कह दिया कि तुम यहां से बाहर जाओ। एक को जम्मू भेज दिया है और एक को कामानडेन्ट बना कर माउंट आबू भेज दिया हैं। क्हा क्या कि तुम्हारे अन्दर अहलियत नहीं हैं। सैन्टर में तो कहा गया कि गांधी सैन्टेनरी के अन्दर किसी हरिजन को राष्ट्रपति बनायेंगे, लेकिन यहां हरिजन किसी अफसर की पोस्ट के लायक भी नहीं समझे जाते। हां मिनिस्टर कुछ हद तक बन सत्रकते हैं। मिनिस्टर भी क्या, आज बाल्मीकियों को कोई वज़ीर नहीं है। हमारे वक्त में पाचं वजीर थे। बाल्मीकि, धाण और दूसरी बरादरियां में से एक एक वज़ीर बनाया हुआ था। लेकिन आज गोवर्द्धन दास जी को जो अच्छे लायक आदमी हैं, काफी पढ़े लिखे हैं, पार्लियामेंन्टरी सैक्रेटरी बनाकर चुप बैठा दिया है। यह तो तुम्हारे अपने हाथ का काम है, थोड़ा सा मिनिस्टरी को और

एक्सपैन्ड कर दो। तुम डिफैक्टर को तो बना सकते हो मगर जो वफदार आदमी है।, थ्रू थिं एंड थिन आपकी मदद करता है, उसको नहीं बना सकते। हरिजनों का नाम लेकर तो आप ज़मीदारे के ऊपर टैक्स लगाते रहते है, मगर हरिजनों को उनका ट्यू नहीं देते।

हरिजन कल्याण फंड का ज़िक्र आया। कहते है कि बटंवारे के बाद 51 लाख रूपया आया। कितना गलत जवाब है यह ? दहेजिया कमेटी की जो रिपोर्ट है उसमें लिखा है कि 91 लाख रूपए से ऊपर आया ळ। मगर मैं इन दोनो को ठीक नहीं मानता मेरे ख्याल से तो डेढ़ पौने दा करोड़ रूपया आना चाहिए था। इसके बारे में राव साहब के वक्त का कैबिनेट डिसिजन है। मूलचन्द जैन जी की बजट स्पीच में भी इसका ज़िक्र आया है। उसको आप पढ़ लें । ओम प्रभा जी, मैने पिछली बार भी इस बात का जिक्र किया था और पंडित भगवत दयाल गवर्नमेंट में तो आप से फैसला कराया था कि प्रति वर्ष आप 40 लाख रूपया जनरल रैवेन्यू में से हरिजन कल्याण फंड में जाम करायेंगी इसी तरह राव साहब की गवर्नमेंट का भ्झी कैबिनेट डिसिजन था कि सरकार साढ़े बावन लाख रूपया प्रति वर्ष हरिजन फाईनेन्स कारपोरेशन को देगी। यह एक कोआप्रेटिव कारपोरेशन था और इसका एम॰सी॰एल॰ टैन टाइम्ज तक था, जिसका मतलब यह कि 10 करोड़ रूप्ये तक की मदद हरिजनों को लि सकती थी, परन्तु आज उसको खत्म कर दिया गया है। क्या मुकाबला करें आप का `और गैर कांग्रेसी

गवर्नमेंट का ? यह तो स्पीकर साहब, मैंने केवल पांच सात बातें बातई, टाईम और होता तो और भी बताता लेकिन मैं अर्ज़ करूं कि आज हालात क्या हैं। आज तो ये डिवैल्पमेंट के लिए हल्के छांट रहे हैं ज़मीदारों के ऊपर एग्रीकल्चरल सैंस को बढ़ा रहे हैं। मगर फ्लड अफैक्टिड इलाकों और बैकवर्ड इलाकें की तरफ इनका कोई ध्यान नहीं हैं। हम तो कहते है कि मैरिट के ऊपर जहां कोई चीज़ बननी हो वहां बनाओं। जिस इलाके को तुम डिवैप करोगे वहां से हम इलैक्शन नहीं लड़ेंगे। जहा से तुम कहोगे वहीं लड़ लेंगे। लेंकिन कम से कम जनता के साथ विश्वासघात मत करों। जिस जनता `स वोट लेते हो उसकी से बेईमानी करते हो। जब तुम अगरले चुनाव में जनता की कचहरी में जाओंगे, लेागो के सामने आओगे तो वे तुम्हारे से पूछेंगे कि तुमने उनके लिए क्या किया ? अभी ही इनका हाल खराब है। स्पीकर साहब, इस बार कांग्रेस के 48 एम॰एल॰एज॰ चुने गये थे, उन में 15 डिफैक्ट कर गए थे जिनमे से 9 इधर रह गए है। एक स्थान खाली है क्योंकि बेचारे एक एम॰एल॰ए॰ का स्वर्गवास हो गया है। इस तरह से इनके कुल 32 एम॰एल॰एज॰ है जिन के ऊपर ये टिके हुए है। रोज इनकी कैबिनेट मीटिंग्ज होती रहती हैं। और लोगों को कहा जाता है कि तुम्हे यह बना देंगे, तुम्हे वह बना देंगे (विघ्न) मै तो डिप्टी चीफ मिनिस्टरी छोड़कर आया था। 6 महीने ते वैसी की वैसी पड़ी रही थी । मुझे तो कांग्रेस हाई कमांड ने धोखा दिया । मैं केवल कांग्रेसी ही नहीं था बल्कि टिकट देने वाली कमेटी का मैम्बर भी

था। इसलिए मैं आप कहता हूं कि इस टूटी छान के पीछे क्यों पड़े हो।

कृषि तथा श्रम मन्त्री : स्पीकर साहब, मैं आपके द्वारा चौधरी साहब से जानना चाहता हूं कि जबकि ये टिकट देने वाली कमेटी के मैम्बर थे अपने लिये टिकट क्यों नहीं ले सके ?

चौधरी चांद राम : मै तो जनता का टिकट ले कर आ गया हूं। (तालियां) और उसी हल्के से आया हूं जहां से तुम्हारी प्राईम–मिनिस्टर आई, निजलिगप्प जी, जि के राज में कांग्रेस खत्म हो रही है, उाब, जगजीवन राम जी आए, लाल बहादूर शास्त्री जी का लड़का आया और पता नही पंजाब और सारे हिन्दुस्तान से कितने आदिमी आए तथा शूगर मिलों की कितनी कारें वहां दौड़ी। स्पीकर साहब, राव साहब की जब सरकार थी तब गनने का भाव साढ़े पन्द्रह रूपए था परन्तु इस बार उस मिल ने जीमंदारों को साढ़े सात रूप्ए के हिसाब से पैसा दिया। यह है इस सरकार का हाल जो कि अपने आपको किसानों की सरकार कहती है। इस सल किसानों का पता नहीं पिछले साल की बनिस्बत कितना खर्चा बढ़ा होगा, लेकिन इन्होने साढ़े सात रूपए के किसाब से उसे पैसे दिए।

स्पीकर साहब, मैं आप का बहुत मश्कूर हूं, क्योंकि आपने मुझे काफी टाईम दिया, लेकिन एक बात मैं अपने कांग्रेसी भाईयों से जरूर कहना चाहता हूं और वह यह कि कांग्रेस अब

एक टूटे हुए छपपर के सामन है। चोने तो यह बहुत पहले से ही लग गई थी मगर अब इसके रात दिन किसी भी वक्त गिरने का खतरा है। इसलिए तुम पहले ही इससे बाहर आ जाओं ताकि उसके नीचे दब जाओं। तुम्हारी सरकार को जनता खत्म करेगी। तुम्हारे पाप और तुम्हारे कुकर्म खत्म करेंगे। इन शब्दों साथ में आपका शुक्रिया अदा करता हूं।

श्रीमती चन्द्रावती (लोहारू) : स्पीकर साहब, मुझे जो आपने बोलने के लिए समय दिया इसके लिए मैं आपकी मश्कूर हूं । आज हमारे सामने जो 1,63,40,250 रूपए का एप्रोप्रिएशन बिल है, मैं इसके पक्ष में अपने विचार रखना चाहती हूं। यह ठीक है स्पीकर साहब हमारी मौजूदा सरकार ने डिवैल्पमेंट के लिए काफी काम किया है। यह भी हम मानने के लिए तैयार है कि इतने थोड़े समय में जो बिजली का प्रोग्राम हुआ है वह बहुत अधिक है। इस युग में बिजली से समृद्धि आती है। हमारी सड़को के लिए वार फुटिंग पर काम करना चाहती है। उसके लिए भी सरकार बधाई की पात्र है।

इसके इलावा मैं कुछ चन्द बातों के विषय में आपके द्वारा सरकार का ध्यान दिलाना चाहती हूं। सब से पहली बात बेरोजगारी के बारे में है। आज बेरोजगारी दिन प्रति दिन बढ़ती जा रही है। इस बेरोजगारी के बारे में पूरा इल्म करने के लिए मैने पिछले सैशन में सवाल भी पूछा था कि सरकार के आंकड़ो को सप्लाई नहीं कर सकी। हम बेरोज़गारी को दूर करना चाहते

है, लेकिन हमारे पास यह आंकड़े न हो कि 70–80 फीसदी लोग जो गांवो में रहते हैं उनके पास कितनी ज़मीन ह, उनका क्या रोजगार है, क्या उनके साधन है ? कम से कम यह आंकड़े तो हमारे पास अवश्य होने चाहिएं। प्रतिदिन मेरे पास भी कम से कम दस लोग ऐसे आते हैं जो बी.ए., एम.ए. मैट्रिक पास होते हैं और कुछ दूसरे भी होते है। अगर हम इनाके रोजगार नहीं दे सके, तो मैं समझती हूं कि उसका असर अच्छा नहीं पड़ता क्योंकि रोज़गार देना एक वैल्फेयर स्टेट का काम है। और उसके लिए हमने कस्म खायी है कि हम इसको सोशलिस्ट पैट्रन पर लायेंगे। आज जो इन्कम में इतनी डिस्पैरेटी है इसको हमें खत्म करना चाहिएं।

स्पीकर साहब, बेरोजगारी के बारे मे मैं थोड़ा सा जफसील में जाना चाहती हूं। अगर हम बेरोज़गारी को खत्म करना चाहते हैं तो हमें इन्डस्ट्रीज और छोटे छोटे उद्योग धंधो का सहारा लेना ही पड़ेगा। जो देश लड़ाई में तबाह हो गयो थे, जिनके यहां नौजवान आदमी कसम खानेे को नहीं था, वे देश आज चोटी के बने हुए है। उन्होने अपनी मशीनरी से, अपने उद्योगों से दुनियां की मार्किट को फल्ड कर दिया है। अपने देश में चीज़े उन्होने बनायी और दुनियां की मार्किट को फलड कर दिया। हमको भी इसी प्रकार से बरेाज़गारी को दूर करने की कोशिश करनी चाहिएं। आज समय की पुकार है कि हमें बेरोज़गारी को दूर करने की कोशिश करनेी चाहिए। आज समय की पुकार है कि हमें बेरोज़गारी को दूर करना है। ज़मीन पर

बसर करने वाले कितने ही लोग आज बेकार हैं। इसलिए सरकार के पास आकड़े होने चाहिएं जिससे विचार–विमर्श करके हम इस समस्या को हल कर सकें। हमारे नौजवान आदमी जो पढ़ लिख कर कोलेजिज़ से बाहर आते हैं उनको रोज़गार न मिलने से उनके अन्दर फरस्ट्रेशन आ जाती है। आज जो युग है इसमें इतनी ज़्यादा तोड़ फोड़ की वृत्तियां बढ गयी है। जिनकी ओर सरकार का ध्यान जाना जरूरी है । स्पीकर साहब, यदि सारे देश से बेरोज़गारी दूर नही कर सकते, कम से कम हरियाणा से तो ज़रूर दूर होनी चाहिए। यहां पर कोई व्यक्ति ऐसा नहीं होना चाहिए जिसके पास धन्धा न हो।

इसके अलावा स्पीकर साहब, मैं थोड़ा सा एडमिनिस्ट्रेशन की तरफ भी सरकार का ध्यान दिलाना चाहती हूं। मैं सारे एडमिनिस्ट्रेशन को तो बुरा नहीं कहती, लेकिन इसके बावजूद भी एडमिनिस्ट्रेशन में बड़ी खामियां हैं, क्योंकि आटोमेटीकली किसी को कोई काम नहीं बनता। मैं समझती हूं कि जितने भी लोग चण्डीगढ़ में आते है, मिनिस्टरों के पास या एम. एलएज. के पास वे इसी लिए आते है कि उनका काम वहां पर नहीं होता। यह सरकार की पापुलेरिटी की निशानी नहीं है। मैं समझती हूं यह तो हमारी एडमिनिस्ट्रेशन की खामियों की निशानी है। जब लोगो के काम ज़िला–स्तर पर और तहसील–स्तर पर नहीं होते है तब वे यहां आते है।

मुख्य मन्त्री : एम.एल.ए. साहिबान ही ज़्यादा लेागो को यहां बुलाते हैं और नाजायज़ काम कराना चाहते हैं।

श्रीमती चन्द्रावती : जायज नाजयज तो रिलेटिव टर्मज़ है। यह तो उन्ही को पता है कि कौन सा ाकम जायज़ है और कौन सा नाजायज़ है। मैं एडमिनिस्ट्रेशन के बारे मे कह रही थी। मैं समझती हूं कि कोई भी एस.पी. या डी.सी. रिश्वत बिल्कुल नहीं रोक सका। कई चीज़े तहसील–स्तर पर ही हो सकती हैं लेकिन नहीं होती हैं और कोई भी डी.सी. या एस.पी. इस रिश्वत को रोकने की कोशिश नही करता मुझे याद है कि डाटर ठडानी हमारे यहां डी.सी. हुआ करते थे। उनके वक्त में एडमिनिस्ट्रेशन के लोगो की वजह से होती है। लिटीगेशन में लोगो का जो इतना टाईम जाया जाता है, उसको बचाया सकता है। इसलिए इस तरफ को कुछ इनसैटिव होना चाहिए। सबसे ज्यादा प्रिविलिज्ड क्लास हिन्दुस्तान के सारकार मुलाज़िम है, जिनको कोई रिस्क नही, कोई चिन्ता नहीं है। इस कलासको सब प्रिविलिज़ मिले हुए है। उनका भविष्य सुरक्षित है अगर वे भी कोई इनसैटिव लेकर काम न करें, तो मैं समझती हूं इससे ज़्यादा अफसोस की बात और कोई नहीं हो सकती और इससे ज़्यादा दर्द की बातें और कोई नहीं हो सकती। जो लोग बिजनैस करने वाले है, खेती करने वाले है उनको तो रिस्क होता है परन्तु सरकारी मुलाजिमों को तो महीने पश्चात् अच्छी तन्खाह मिलेगी और उन्हे अच्छा बंगला मिला हुआ होता है, यदि वे कही बाहर जाते है तो उनके ठहरने को रैस्ट

हाउस में प्रबन्ध होता है। धौधरी चान्द राम जी ने अभी कहा और मुझे भी याद है कि एक बार चीफ सैक्रेटरी साहब ने लिखा था कि सिर्फ गिनिटरीज़ और अफसर ही रैस्ट हाउस में ठहर सकते है। मुझे अब खुशी है कि अब रैस्ट हाउस में एम.एल.एल. भी ठहर सकते है। और अगर जगह हो तो दूसरे लोग भी ठहर सकते है।

अब मैं थेड़सा शिक्षा के सम्बन्ध में कहना चाहती हूं। शिक्षा के विषय में कहने से पहले, जो वहां पर कुरप्ट अफसर बैठे हैं उनके बारे में ज़िक्र करना चाहती हूं। काफी अफसरों की ट्रासफरज़ होती है और हमने भी ट्रांसफर कराये हैं, परन्तु इस तरह से बीमारी का इलाज नहीं हो सकता मैं तो यह कहूंगी कि जो कुरप्ट अफसर है उनको कम्पलसरी रिटायारमैंट दे देनी चाहिए, या उनको डिसमिस कर देना चाहिए और यह तभी हो सकता है जब मिनिस्टर और बड़े अफसर इस बात को समझे। अगर एक मिनिस्टर किसी को सजा देना चाहता है लेकिन सैक्रेटरी नहीं चाहता, तो उस आदमी को सज़ा नहीं दी जा सकती। हां सैक्रेटरी चाहता है तो सज़ा दी जा सकती है। इसलिए अगर तहसीदार रिश्वत लेता है, तो उसकी जिम्मेदारी डी॰सी॰ पर हो, अगर थानेदार रिश्वत लेता है तो उसकी जिम्मेदारी एस॰पी को हो, अगर एस.पी. रिश्वत लेता है तो उसकी जिम्मेदारी आई.जी. पर होनी चाहिए। अगर आई.जी भी लेता है तो उसकी जिम्मेदारी होम सैक्रेटरी था मिनिस्टर पर होनी चाहिए। जब तक हम अपनी अपनी

जिम्मेदारी अपने ऊपर नहीं लेंग तब तक किसी तक किसी तरह से भ्ज्ञी रिश्वत को बन्द नहीं कर सकते ?

श्री अध्यक्ष : हमारी जिम्मेदारी कौन लेगा ?

श्रीमती चन्द्रावती : हमारी जिम्मेदारी कांस्टीच्युशन की है। विधाता का नियम है, और वैसे तो जनता ही पांच साल के बाद हमारा हिसाब किताब ले लेती है। एडमिनिस्ट्रेशन के अन्दर कुछ व्यूरोक्रेसी है जिसकी वजह से सारा ढांचा ही खराब है अगर हम एम.एल.एल लोग भी कोई गलती करते है, तो हम को "डौक" में खड़ा करने का जनता का अधिकार है। लेकिन जब हम लोगों को जनता ने नुमाईन्दा बना कर भेज है तो प्रजातन्त्र के अन्दर हमारा फर्ज़ ही है कि हम एडमिनिस्ट्रेशन की खामियों को प्वायंट आउट करे।

स्पीकर साहब मुझे एक बता और याद आ गयी है कि हमारा एम.एल.एज. का जो बिल तन्खाहों का पास हुआ, यह ज़रूरी था। अगर पहले से एम.एल.एज. की तन्खाहें बढ़ाते तो और भी ठीक होता। लेकिन पहले वाले एम.एल.एज. को इस तरह रखा गया जैसे कि वे पे स्केल में काम कर रहे हों। यह तो हर कोई जानता है कि कुछ एम.एल.एल. मज़दूर क्लास से आते है और कुछ किसान क्लास से आते लेकिन वह भी चाहते है कि उनका भी कुछ स्टैंडर्ड हो। अगर आप के मन में यह डर था कि एक एम.एल.ए. का स्टैंडर्ड एक क्लर्क के बराबर हो जाएगा, क्योंकि एक कर्लक

को समाज हिारत की दृष्टि से देखता है तो आपको पहले से एम. एलएज. को अलग स्टैंडर्ड मेनटेन करना चाहिए था। आज क्या हो रहो है ? हर चीज़ की कीमत बढती जा रही है। आज कुछ और कीमत है कल कुछ और बढ़ जायेगी कुछ लोग पालिटीशन्ज़ के साथ मिले हुए हैं, और कुछ कैप्टिलिस्टस के साथ मिले हुए हैं। मैं कहती हूं कि कैप्टिलिस्टस ने मिलकर सारे समाज का सारा ढांचा ही खराब कर दिया है। मै। एजूकेशन के बारे में भी कुछ कहना चाहती हूं। इसक `बांचे को देखने से पता चलता है कि इसमें समथिंग इज वैर रेांग। और गांवो की पढ़ाई देखी जाए तो आपको पता चलेगा कि ठीक ही नहीं है। हमरे देहात में पढ़ने वाले बच्चे वण्डीगढ में पढ़ने वाले बच्चों की बराबरी नहीं कर सकते। मेरा सुझाव यह है कि कुछ ढांचा ऐसा बनाया जाना चाहिए कि बच्चों को बराबरी के चांसिज़ हो। यह जो माडल स्कूल या पब्लिक स्कूल्ज़ है यह इस प्रान्त में नहीं होने चाहिए। और अगर यह रहे तो फिर सभी बच्चों को शिक्षा के अवसर समान मिलें। ऐस किए बगैर हम आगे बराबर से नहीं बढ़ सकते। ऐजूकेशन का महकमा चीफ मिनिस्टर के पास है। वह यहां इस वक्त बैठे नहीं है लेकिन इस सम्बन्ध में उन्हे ड्रास्टिक स्टैप्स लेने चाहिएं । (शुक्रिया)।

Mr. Speaker : I may observe that as there are still so many Members who want to speak and only 25 minutes are left, I am afraid no hon. Member will be allowed to speak for more than five minutes.

चौधरी बनवारी राम (जुण्डला एस. सी.) : स्पीकर साहब, बंसी लाल सरकार का यह तीसरा सैशन लगा है। तीनों सैशनज़ में मैंने कांग्रेस के सदस्या की स्पीचे सुनी और इनके बारे में जनता की बाते सुनी। लेकिन स्पीकर साहब, यह हमारी समझ में नहीं आया कि इन्होंने क्या जादू किया है ? मज़दूरो किसानों और बेकार हरिजनों की टोलियों की टोलियां फिरती है, मगर उनको यह अपने साथ लगाए रहते हैं। हालांकि इनकी इतनी उमर हो गई है और अब करीब सभी बूढ़े हो रहे हैं, मगर यह उनकी बेरोज़गारी दूर नहीं कर सकं। और न किसी की जबान से यह निकलता ही है कि हमें उनकी बेरोजगारी दूर करनी है। आज स्पीकर साहब जो सब से ज़्यादा गरीब है, वह हरिजन है और यह जिम्मेवारी कांग्रेस की है। यह जा`दुःख उठा रहे है, यह सिर्फ कांग्रेस के कारण दुःख उठा रहे है। अब वक्त आ गया है कि चाहे हरिजन इधर है या उधर है, सब ने इकट्ठे हो कर बिगुल बजाना है और बगावत का बिगुल बजाना पड़ेगा।

(Chaudhri Maru Singh Malik, a Member of Panel of Chairmen, occupied the Chair)

मैं कांग्रेस के बारे में क्या कहूं ? एक आदमी खड़े खड़े मूत रहा था। तो किसी ने कहा कि यह तो बड़ा माड़ा काम है। लेकिन कोई और पास बैठा था वह उसे जानता था और उसके बड़ो को भी जानता था। बोला : कि यह तो खड़े हो कर ही मूतता है इसका बाप तो मूतते वक्त फैरे डालता था। तो इस कांग्रेस का तो

नीचे से ऊपर तक तो ऐसा ही हाल है। मैं तो इन तमाम कांग्रेसियो को प्रार्थना करूंगा कि इस देश को बचाओ। मैं मिनिस्टरों के विरूद्ध नही हूं मगर मजदूरो के हक के लिए बोलूंगा, फिर चाहे वह बंसी लाल की हमूमत हो या पंडत भगवतदया की हकूमत हो, मैं जरूर पकड़ूंगा अगर मज़दरों का भला न किया गया । यह सरकार न जाने क्या क्या इनाम दे रही है। यह चौधरी खुरशीद साहब बैठे है इन्होने सिवल में क्या किया हरिजानों को ऐसा इनाम दिया कि इनके बच्चे ही नह हो जनाब हरिजों को कत्ल तक किया गया। यह नौबत आ गई । यह हमारे हरिजनों के वज़ीर रण सिंह बैठे है। इन से पहले तो मज़दूरों के लड़के या बुजुर्ग कत्ल होते थे, लेकिन इस ज़ाजिम हकूमत के वक्त में तो लड़कियों का कत्ल किया गया। (शेम शेम अपोज़ीशन की तरफ से) कल चीफ मिनिस्टर साहब ने कहा था कि पुलिस बड़ा अच्छा काम कर रही है और स्टेट में अमन है। मैं हैरान रह गया कि यह क्या कह रहे है ? क्या इन्हे पता नहीं कि भगाना रांड की लड़की के साथ जबरजना किया गया और उसके 5 टुकड़े कर दिए और कातिल गिरफ्तार नहीं हुआ ? क्या यही इनका अमन है, और क्या इनकी पुलिस का यही अच्छा काम है? इनको शर्म से डूब कर गड़ जाना चाहिए (विघ्न)

श्री चेयरमैन : एक मिनिट और है।

चौधरी बनवारी राम : बेइमान डी. डी. केश्यप।

श्री चेयरमैन : किसी का नाम न लीजिए

चौधरी बनवारी राम : यह इलज़ाम तो जलसों में लगाया गया था, मैं कैसे नाम न लूं ? एक बहादूर अफसर एस.पी. है। उस ने उन कातलों को गिरफ्तार किया था। लेकिन इस सरकार ने उस को बदल कर नीलोखेड़ी लगा दिया है। लेकिन जब इन्होने देखा कि उस मं बहुत हौसला और ुर्रत है तो उसको वहां से भी उठा कर हिमाचल में भिजवा दिया। जिने भी टीचर है और जो हरिजन मुलाज़िम है उन के साथ बुरा सलूक किया जा रहा है। जलवाने के एक टीचर पर पागलपन का केस बनाया गया और हैडमास्टर ने उसको मरवाना चाहा। मैने उसके बारे मं सरकार को दरखस्त दी, लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ और उसको ज़्यादा से ज़्यादा सताना शुरू कर दिया गया है। मैं तो इस सरकार से कहता हूं कि अब आप का अन्त हो चुका है। न तो चहां पर ओम प्रभा जैन जी हैं, न पोसवाल साहब हैं, और न ही चौधरी रण सिंह है। चौधरी रण सिंह अगर गरीब होता तो जितने जुलम आज हरियाणा में हो रहे है, उनको देखते हुए इस कुर्सी को ठोकर मरकर चला जाता। यह चौधरी चांद राम की नुक्ताचीनी करता है ? अरे तू पंडित भगवत दयाल को भूला हुआ है जो आदमी अपने गुरू को और बाप को ठोकर मार सकता है वह जनता का कैसे हो सकता है। मैं चैलिंज करता हूं कि अगर जनता रण सिंह के साथ है और वह जनता पर विश्वास रखत है, तो मैं भी रीजाईन करता हूं और वह भी मेरे साथ रीजाईन करके

इलैक्शन लड़े अगर वह कामयाब हो कर आ जाए तो हम मान जायेंगे।

(इस समय उपाध्यक्षा पदासीन हुई)

सिचांई तथा विद्युत मन्त्री : वह तो एक बार ही इस्तीफा देकर पछता रहा है आप अब दूसरी बार क्यों इस्तीफा दिलवा रहे हैं।

चौधरी बनवारी राम : आप दिल्ली का, कैरला का और बंगाल का नक्शा देख लो अगर तुम हकूमत को बचाना चाहते हो, हरियाणा को बचाना चाहते हो तो ठीक रास्ते पर आ जाओ वरना जिस वक्त तूफान की आंधी आएगी तो सवाल नहीं पैदा होता कि आप सुख का सांस ले लोगे।

सिचांई तथा विद्युत मन्त्री : मैं आप के जरिए मैम्बर साहब से दरखस्त करंगा कि वह जरा आहिस्ता बोले यहां पर कहीं उनकी तबीयत की न साफ हो जाए।

चौधरी बनवारी लाल : डिप्टी स्पीकर साहिबा, रोता वही है जिसे दुःख होता है, जिसे दुःख नहीं होता वह क्यों रोवेगा ? मैं मन्त्री महोदय से कहना चाहता हूं कि जैस आज हमारे लड़के ठोकरें खा कर रूलते फिरते हैं, इसी तरह तुम रूलते फिरोगे यह जिने भी विगे टेढे तरीको से हमें सता रहे हैं, शायद इन पर पैट्रोल गेर कर फूकना पड़ेगा। इनका वह वक्त अब हुआ नहीं है। मैं अपनी हरियाणा सरकार से दरखस्त करूंगा कि हम गरीब हैं,

हम कोई बगावत नही कर रहे हम सिर्फ रोटी कपड़ा और मकान चाहते हैं, इसलिए हम को जो गवर्नमैंट के पास जमीन है वह दे दी जाए। हम कोई किला नहीं मांगते और कोई सूबा नहीं मांगत। अगर सरकार हमारी जरूरियात पूरी कर दे, तो हम सब मजदूर उस सरकार का गूण गाएंगे और उस की इज़्जत करेंगे। मेरी बहन ओमप्रभा जैन ने कहा था कि बनवारी राम जमीन का सुझाव दो कि किस तरह से तकसीम की जांए ? डिप्टी स्पीकर साहिबा, इन्होंने इन्साफ यह कर रखा है कि हरिजनों के पास जो कहीं थोड़ी बहुत जमीन थी वह छीन रखी है और अगर मैं कोई सुझाव दे देता तो शायद यह उनको पाकिस्तान में ही पहुंचा देते। आप गरीबों की वोट ले कर आए है, गरीबों ने आज तक तुम्हे प्या किया है, इसलिए आप का भी उनमें प्यार करना चाहिए और अगर आप उनके साथ हमदर्दी नहीं करेंगी तो अब की बार वे आप को बहुत बुरी सजा देंगे ऐसी सजा देंगे कि आप याद रखेंगे। गरीबों को बदला लेने की तब जरूरत पड़ती है, जब उनके साथ बेइन्साफी होती है। आप लोगो ने तो वोटरों को धोखा दिया है, सेकिन धोखा एक ही बार दिया जा सकता है ज़्यादा बार नहीं दिया जा सकता। आप को अपने वोटरों की तो मदद करनी ही चाहिए। मैं अपने चीफ मिनिस्टर साहब से प्रार्थना करूंगा कि सरकार के पास जितनी फालतू जमीन है वह सारी हरिजनों को दे दी जाए। नोकरियों के बारे में मैं सवाल पूछना चाहता था कि हरिजनों के लिए कितनी रिजर्व सीटे है, लेकिन उसका मुझे जवाब नहीं दिया गया ? मैं निवेदन करूंगा कि जितना हरिजनों का

नौकरियों में कोटा बाकी पड़ा है वह सारे का सारा पूरा किया जाए।

उपाध्यक्षा : अब मैं चौधरी लाल सिंह को दो मिनट बोलने की इज़ाजत देती हूं उसके बाद मिनिस्टर साहिब ने बोलना है।

कुछ आवाज : टाईम एक्सटैण्ड कर दो।

उपाध्यक्षा : देखिये, आपकी दूसरी सिटिंग भी होनी है इसलिये टाईम ऐस्टटेण्ड नहीं सकता। अगर आप चाहते है कि आपने बोलना है और मिनिस्टर साहब से अपनी बातो का जवाब नहीं सुनना है तो मैं आप को टाईम दे देती हू, लेकिन उनका सुनना जरूरी है क्योंकि जो बाते आपने कहीं है।, उनका जवाब मिनिस्टर साहब ने देना है।

श्री मंगल सैन : यह एप्रोप्रिएशन बिल है जो बड़ा अहम होता है और अपोजिशन की तरफ से सिर्फ चौधरी चांद राम जी ही

उपाध्यक्षा : नहीं ऐसी बात नहीं आपकी तरफ से दो बोले है और उधर से एक बोला है।

श्री मंगल सैन : उनकी बोलने की जरूरत नहीं, बाते तो हम ने बतानी है आपने उनको ही नहीं, हमारे हकूक को भी

देखना है अभी बहुत सारे बोलने वाले है हमारे पहलवान जोगिन्द्र संह जी ने अभी बात कहनी है

उपाध्यक्षा : मै अब हाउस ऐक्सटैंड नहीं कर सकती क्योंकि वक्त थोड़ा रह गया है। और दूसरी सिंटिग साढ़े ग्यारह बजे शुरू होनी है।

श्री मंगल सैन : फिर सोमवार तक चलने दें इसको।

उपाध्यक्षा : देखिये, बिनिस एडवाईजरी कमेटी आपकी ही बनाई हुई है, और उसका जो फैसला होता है उसको आप सब को मानना है। इसलिये ऐसा नहीं हो सकता (शोर)

चौधरी जोगिन्द्र सिंह : अगर आप मुझे टाइम नहीं दे सकती तो आधा घंटा इन प्रोसीडिंग्ज के बाद हमारी बात सुन लेना (हंसी)

उपाध्यक्षा : हां हाउस एडजर्न होने के बाद आपकी बात सुन लूंगी (हंसी)

श्री मंगल सैन : डिप्टी स्पीकर साहिबा, जोगिन्द्र सिंह जी का कहने का आशय यह था कि वजीर साहिब की बात सुन कर पांच मिनट इन की बात हाउस में सुन लेना। कमरे में क्या करेंगे आप के पास जा कर वह (हसी)

उपाध्यक्षा : जोगिन्द्र सिंह जी मैं आपको सिर्फ दा मिनट देती हूं जल्दी खत्म करें।

चौधरी जोगिन्द्र सिंह (नारनौंद) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैं आप को बताना चाहता हूं कि कल चीफ मिनिस्टर साहब ने स्पीच दी थी कि किसी के साथ विक्टेमाइज़ेशन नहीं हो रही है लेकिन मैं सबूत दे सकता हूं कि हो रही है। ज़िला हिसार में और लगह तो सड़के बनी होंगी लेकिन मेरा हल्का जो बहुत बैकवर्ड है वहां एक इंच भी सड़क इन्होने नहीं बनाई है। मेरे साथ गवर्धन दास जी का हल्का लगता है वहां तो सड़के मन्जूर हुई है, लेकिन जहां से मेार हल्का शुरू होता है वहां से आगे कोई सड़क मंजूर नहीं की है। चीफ मिनिस्टर साहब ने कहा था कि वह तो मेरे बड़े भाई का हल्का है इसलिये उस में ही काम होगा, इससे आगे नहीं होगा। (शेम शेम की आवाजें) फिर मेरे हल्का में बिजली भी नहीं दी जाती है। वहां दो गांव के लिये ही जा`बिजली मंजूर हुई थी उसे मंजूर हुए आठ महीने हो गए है लेकिन वहां भी काम नहीं हो रहा

उपाध्यक्षा : आप का टाइम हो गया है। अब आप बैठ जायें।

सिचांई तथा विद्युत मन्त्री (श्री के.ऐल. पोसवाल) : डिप्टी स्पीकर साहिबा, मैंने सिर्फ एक दो निट ही लेने हैं चौधरी चांद राम जी ने ज़िक्र किया और ऐलीगेशन लगाई कि इलैक्ट्रसिटी बोर्ड की कुछ जीपें या कारें यहां देखी गई और वह सैर करने आए हुए थे। मुझे खुशी होगी अगर चौधरी साह या कोई और मैंबर उसक कार या जीप का नम्बर दें और तारीख बता दें, ताकि

हम इस बारे में इन्कवायरी कर सकें। वह जरूर किसी काम आए होंगे सैर करने कोई नहीं आता और न आए होंगे यह बात तो उन्होने मानी है कि 21 हजार कुनैक्शन मिले है। इनके पास भी ताकत रही है लेकिन यह नहीं दे सक। फिर यह कहते है कि सारे कुनैक्शनज़ कुरप्शन से मिले है और मिलते है। यह इतने जिम्मेदार आदमी है मिनिस्टर रह चुके है और इनको तजरूबा है ऐडमिनिस्ट्रेशन का ..

Shri Roop Lal Mehta : There is no doubt that there is corruption from top to bottom. (Noise and iterruptions).

सिचांई तथा विद्युत मन्त्री : आपने ही लिए होंगे किसी ने दिये होंगे आपको (शोर)

Shri Roop Lal Mehta : You share with them. you get you share from the S.D.Os. electricity. you are a smuggler. How can you say that to me?

(Interruption)

सिचांई तथा विद्युत मन्त्री : मै मैंबर साहिबान से निवेदन करूंगा कि अगर कोई ऐसी बात है कि कोहीं कोई किसी से लेता देता है, तो उस बोर्ड के कर्मचारी की कोई सपैसेफिक मिसाल दे ताकि हम भी ऐक्शन ले सकें, और अगर गलत हो तो, यह भी उसका मयूज़िक फेस कर सकें। यू ही वाईल्ड ऐलीगेशन्ज लगाते जाना

कि धड़ाधड़ ट्रान्सफरमर्ज जल रहे है और सब पैसे लेते है मुनासिब नहीं है।

11 A.M

उपाध्यक्षा : मै आनरेबल मैम्बर्ज से रिक्वैवेस्ट करूंगी कि वे ठीक तरह से बोलें, यह ठीक है कि उन्हे आज़ादी के साथ बोलने की छुट है (इंट्रप्शन) लेकिन उन्हे हाउस के डैकोरम को ध्यान में रखना चाहिए। मे हाउस के डैकोरम को सबस ज्यादा तरजीह देती हूं ।

(इस समय अध्यक्ष महोदय पदासीन हुए)

सिचांई तथा विद्युत मन्त्री : स्पीकर साहिब मैं अर्ज़ कर रहा था कि आनरेबल मेम्बर्ज़ ने इलैक्ट्रिसिटी बोर्ड पर कुछ ऐलीगेशन्ज़ लगाये थे, मै। मैमब्र साहिबान से दरख्वास्त करूंगा कि अगर किस किसम के ऐलीगेशन्ज़ हो, तो हमारे नोटिस में लाये, हम उनकी इन्क्वायरी करेंगे जो आफिसर या आफिशियल कसूरवार होंगे, उन्हे संस्पेंड करेंगे, डिसमिस करेंगे, लेकिन एक वाइल्ड ऐलीगेशन लगाना कि सब पैसे लेते हैं, सब कुरप्ट हैं, यह ठीक नहीं। आपको तो इस कामयाबी पर दाद देनी चाहिए कि गवर्नमेंट ने बहुत अच्छा काम किया है। मैं बताता हूं कि लाईनमैन इतने दत्तचित होकर काम में लगे हुए थे कि वे कई कई महीनों अपने घर नहीं गये।

Mr. Speaker : I know one thing, that is that the people appreciate the excellent work done by the Electricity Department.

सिचांई तथा विद्युत मन्त्री : अगर आपने जीपें या कारें देखी हो तो उनके नम्बर दें और पता करा लें।

Mr. Speaker : There is hardly any time left now. Now Chaudhry Ran Singh, please

कृषि तथा श्रम मन्त्री (चौधरी रण सिंह) : स्पीकर साहब, मेरा कोई इरादा नहीं था कि आप का समय लूं क्योंकि पहले ही काफी समय हाउस का खर्च हो चुका है, बहुत कम समय बाकी रहा है मेरे सीनियर साथी चौधरी चांद राम जी, जो हरियाणा में और ज्वांयट पंजाब में एक बहुत बड़े मिनिस्टर रह चुके हैं और वह बहुत देर से हाउस के सदस्य चले आ रहे हैं, आज वह बहुत सी बाते गलत फहमी में कह गये हैं। मैं नहीं चाहता कि उन्हे कोई गलत फहमी रहे, इसलिये मैं सिर्फ दो मिनट मं उस बात का ज़िक्र करना चांहूंगा जो उन्होने सड़को के बारे में कही है। इन्होने अपने हल्के की सड़को का ज़िक्र किया। इस समय चौधरी चांद राम जी का`मालूम है कि वे रादौड़ के हल्के के एम.एल.ए. है जहो से मैं इलक्शन लड़ा करता था। यहां की एक खास बड़ी कहानी है, इस मं तो मैं नहीं पड़ना चाहता कि वह कैसे मैंबर बने, लेकिन इतना ज़रूर कहूंगा कि वह हाथ जोड़कर बैठ जाते थे कि मेरे को रोहतक हल्के

Rao Birender Singh : On a point of order, Sir. Can a personal charge be made against an hon. Member of this House under rule 100 /

चौधरी चान्द राम : ये गलत कहते है कि मैं रोहतक ज़िले से नही ंलड़ सकता था (व्यवधान) आप इलैक्शन करवा कर देखें तो पता लगेगा। (व्यवधान)

Mr. Speaker : I think you should keep away from making personal allegations.

कृषि तथा श्रम मन्त्री : मै गलत नहीं कह रहा, इन को बहुत से लोग जानते हैं जिन्होनें कहा कि चौधरी चांद राम रोहतक ज़िलें के हल्के सक इलैक्शन लड़ना चाहते थे, लेकिन लोगों ने उन्हे वहां से निकाल दिया था। मैं बिल्कुल सच कहता हूं। स्पीकर साहब, ये मुझे एक दिन कहने लगे कि करनाल ज़िले में ाकेई ऐसा हल्का बताओं जहां से मैं इलैक्शन लड़ सकूं ? मैंने कहा कि चिन्ता करने की कोई जरूरत नहीं

Rao Birender Singh : Sir, allegations cannot be made by a Minister the hon. Member.

Agriculture and Labour Minister : What is the charge?

आवाजें : यह ऐलीगेशन नहीं है।

राव बीरेन्द्र सिंह : यह पर्सनल चार्जिज हैं।

चौधरी चान्द राम : मिनिस्टर को बिल पर बोलना चाहिये, अगर ये इस तरह से पर्सनल लगाते है तो मुझे भी बाद में मौका मिलना चाहिये, या हाउस की एक कमेटी बना दी जाये और वह देखे कि क्या चार्जिज है और उन पर अपना फैसला दे। (व्यवधान)

Mr. Speaker : I don't think he was making any personal charge angainst any one. Please let the Minister carry on.

कृषि तथा श्रम मन्त्री : ये पर्सनल चार्जिज नहीं हैं मै। कह राह था कि जब उन्होने पूछा कि कोइ और हल्का बताओ तो मैंने उनका आदर करते हुए कहा कि मेरा अपना हल्का आपके लिये हाजिर है और इस लिये मैंने उसे छोड़ दिया था।

चौधरी चान्द राम : क्या आपको पता नहीं कि लोगो ने आपको वहां पर वोट देने से इन्कार कर दिया था ?

कृषि तथा श्रम मन्त्री : स्पीकर साहब, मैं चांद राम जी का मश्कूर हूं कि उन्होंने उस हल्के का ज़िक्र किया जो मेरा खादर का हल्का होता था। यह सच्ची बात हैं, वहां पर सड़कों की बड़ कमी थी। आपको पता है, रादौड़ के लिये जो नोट टाईप करवा कर भेजा था, वह इसलिये भेजा था कि वाकई वहां सड़को की बड़ी जरूरत थी। जिस वक्त मैं असैम्बली में खड़े हो कर कहा करता था कि मेरे खादर के इलाके में, खासकर चौमासे के दिनों में, आदमी की ज़िन्दगी एक मछली की तरह होती है, उस वक्त

इनका इस तरफ कोई ध्यान नहीं आता था। ठीक है इन्होंने अपने हल्के का ज़िक्रा किया है, लेकिन अब इन्हे शायद यह पता नहीं कि सड़के कहां कहां मन्जूर हुई हैं, कहां कहां बन रही हैं। शायद ही हरियाणा का कोई व्यक्ति ऐसा हो जो यह न जानता हो कि आज हरियाणा में बिजली का काम और सड़को का काम कितनी तेजी से हो रहा है, कितनी रफ्तार से हो रहा है। जिन सड़को को इन्होने ज़िक्र किया है वे हमने मन्जूर कर दी हुई है हालांकि उन को आप मन्जूर नहीं कर सके थे। रादौड़ चौथी प्लान में है और हमार ख्याल है कि हम उसको पूरा कर के छोड़ेंगे। सड़कों के बारे में हमारा पूरा प्रोग्राम बना हुआ है। चीफ मिनिस्टर साहिब ने कल हाउस में कहा था कि पांच साल के प्रोग्राम में हर गांव में पक्की सड़क बन लायेगी।

Mr. Speaker : There are hardly six minutes left. So you may speak for one minute more.

कृषि तथा श्रम मन्त्री : मै दा मिनट लूगां। चौधरी चांद राम ने हरिजन वैल्फेयर का ज़िक्र किया, बहुत अच्छी बात है, पता नहीं कैस उन्हे इस बारे में अकल आ गई है ? (व्यवधान)।

श्री मंगल सैन : अकल इनको आ गई या हमको आ गई (व्यवधान)।

Highly objectionable. his is insinuation of very serious type. Indirectly it means, he has no intelligence

(Interruptions and noise)

कृषि तथा श्रम मन्त्री : चौधरी राम जी ने कहा कि हरिजन वैल्फेयर आफिस में कोई हरिजन आफिसर गज़ेटड नही है। मैं उनकी इन्फर्मेशन के लिये कहना चाहता हूं कि महेन्द्रगढ़ का डी.सी. हरिजन है।

चौधरी चान्द राम : वह आफिशिएटिंग डी.सी. है।

He is just an acting D.C. Now Major Sahib has told me that that D.C. has gone.

कृषि तथा श्रम मन्त्री : हरिजन वैल्फेयर का एक ऐसा महकमा है जिसके किसी भी आफिसर को मुद्द से गजेटिड नहीं बना सके थे। एक डायरैक्टर के इलावा कोई गजेटिड अफसर नहीं हुआ करता था, लेकिन हम ने बना दिया। गजेटिड आफिसर की देख रेख में हम बहुत ज़्यादा काम तेजी के साथ कर सकेंगे और जो काम पहले कभी नहीं हुए, अब होंगे।

चौधरी चान्द राम : आन ए प्वांयट आफ पर्सनल ऐक्सपलेनेशन, सर । स्पीकर साहब, पर्सनल चार्जिज जो इन्होने लगाये है वे लफ्ज़ आप ने एक्सपंज कर दिए होंगे क्योंकि पर्सनल चार्जिज़ ये लगा नहीं सकते। अगर लगा रहे हैं और इस तरह यह एक प्रथा सी बन गई है तो कोई भी मैंबर किसी दूसरे मेम्बर पर पर्सनल चार्जिज लगा सकता है। जो चार्ज मुझ पर लगाया है, अगर कोई भी मैंबर साबित कर दें कि मैंने रोहतक ज़िले का

हल्का इसलिये छोड़ा कि मैं वहां से कामयाब नहीं हो सकता था (व्यवधान)

मुख्य मन्त्री : तभी घर छोड़ कर भागते है जब उनको कोई रखता नहीं हैं ?

चौधरी चान्द राम : इनको खुद पता है कि उन्होने पांच–सात हजार रूपये से मेरी मदद की और मेरे गले में माला डाली थी। इस साल भी मुझे आफर किया था, मैने कहा कि मैंने एक ज़िले में ही काम नहीं करना, दूसरे ज़िलों में भी लोगो कि सेवा करनी है। बावजूद इसके, स्पीकर साहब, मैं खुश हूं कि ये अपना पुराना हल्का बना दें। मुझ को परसनली इस मं कोढ फायदा नहीं। ये अगर कुछ परसनल बातें कह भी देंगे तो भी मैं इनका मश्कूर हूंगा।

Mr. Speaker : Question is –

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill, be taken into consideration at once.

The motion was carried.

Clause 2

Mr. Speaker : Question is –

That clause 2 stand part of the Bill

The Motion was carried.

Clause 3

Mr. Speaker : Question is –

That clause 3 stand part of the Bill

The Motion was carried.

Schedule

Mr. Speaker : Question is –

That Schedule be the Schedule of the Bill.

The Motion was carried.

Clause 1

Mr. Speaker : Question is –

That clause 1 stand part of the Bill

The Motion was carried.

Title

Mr. Speaker : Question is –

That Title be the Title of the Bill.

The Motion was carried.

Finance Minister (Shrimati Om Prabha Jain) : Sir, I beg to move –

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill, be passed.

Mr. Speaker : Motion moved –

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill, be passed.

Mr. Speaker : Motion moved –

That the Haryana Appropriation (No. 3) Bill, be passed.

11.15 A.M. The motion was carried

Mr. Speaker : The House stands adjourned till 11.30 a.m. to-day.

(The House then adjourned till 11.30 A.M. the same day.)